

मात्राभार गणना (विस्तृत)

Rule 1:

(१) हिंदी में ह्रस्व स्वरों (अ, इ, उ, ऋ) की मात्रा १ होती है जिसे हम लघु कहते हैं

Rule 2:

(२) हिंदी में दीर्घ स्वरों (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं) का मात्राभार २ होता है, जिसे हम गुरु कहते हैं.

Rule 3:

(३) हिंदी में प्रत्येक व्यंजन की मात्रा १ होती है, जो नीचे दर्शाये गए हैं-

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ,

ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म,

य, र, ल, व,

श, ष, स, ह

जैसे- अब = ११, कल = ११, करतल = ११११, पवन = १११, मन = ११, चमचम = ११११, जल = ११,

हलचल = ११११, दर = ११, कसक = १११, दमकल = ११११, छनक = १११, दमक = १११, उलझन = ११११,

बड़बड़ = ११११, गमन = १११, नरक = १११, सड़क = १११.

Rule 4:

(४) किसी भी व्यंजन में इ, उ, ऋ की मात्रा लगाने पर उसका मात्राभार नहीं बदलता अर्थात १ (लघु) ही रहता है-

दिन = ११, निशि = ११, जिस = ११, मिल = ११, किस = ११, हिल = १११, लिलि = ११, नहि = ११, महि = ११, कुल = ११, खुल = ११, मुकुल = १११, मधु = ११, मधुरिम = ११११, कृत = ११, तृण = ११, मृग = ११, पितृ = ११, अमृत = १११, टुनटुन = ११११, कुमकुम = ११११, तुनक = १११, चुनर = १११, ऋषि = ११, ऋतु = ११, ऋतिक = १११.

Rule 5:

(५) किसी भी व्यंजन में दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं) की मात्रा लगाने पर उसका मात्राभार (दीर्घ = गुरु) अर्थात २ हो जाता है.

हारा = २२, पारा = २२, करारा = १२२, चौपाया = २२२, गोला = २२, शोला = २२, पाया = २२, जाय = २१, माता = २२, पिता = १२, सीता = २२, गई (गयी) = १२, पीला = २२, गए (गये) = १२, लाए (लाये) = २२, खाओ = २२, ओम = २१, और = २१, ओकात = औकात = २२१, अंकित = २११, संचय = २११, पंपा = २२,

मूली = २२, शूली = २२, पंप (पम्प) = २१, अंग = २१, ढंग = २१, संचित = २११, रंग = २१, अंक = २१, रंगीन = २२१, कंचन = २११, घंटा = २२, पतंगा = १२२, दंभ (दम्भ) = २१, पंच (पञ्च) = २१, खंड (खण्ड) = २१, सिंह = २१, सिंधु = २१, बिंदु = २१, पुंज = २१, हिंडोला = २ २ २, कंकड़ = २११, टंकण = २११, सिंघाड़ा = २२२, लिंकन = २११, लंका = २२.

Rule 6:

(६) गुरु वर्ण (दीर्घ) पर अनुस्वार लगने से उसके मात्राभार में कोई अन्तर नहीं पड़ता है,

नहीं = १२, सींच = २१, भींच = २१, हैं = २, छींक = २१, दें = २, हींग = २१, हमें = १२, सांप = २१

Rule 7:

(८) शब्द के प्रारम्भ में संयुक्ताक्षर का मात्राभार १ (लघु) होता है,

जैसे- स्वर = ११, ज्वर = ११, प्रभा = १२

श्रम = ११, च्यवन = १११, प्लेट = २१, भ्रम = ११, क्रम = ११, श्वसन = १११, न्याय = २१.

Rule 8:

(९) संयुक्ताक्षर में ह्रस्व (इ, उ, ऋ) की मात्रा लगने से उसका मात्राभार १ (लघु) ही रहता है,

जैसे- प्रिया = १२, क्रिया = १२, द्रुम = ११, च्युत = ११, श्रुति = ११, क्लिक = ११, क्षितिज = १११, त्रिया = १२

Rule 9:

(१०) संयुक्ताक्षर में दीर्घ मात्रा लगने से उसका मात्राभार २ (गुरु) हो जाता है, (अर्थात् कोई शब्द यदि अर्द्ध वर्ण से शुरू होता है तो अर्द्ध वर्ण का मात्राभार ० (नगण्य) हो जाता है)-

जैसे- भ्राता = २२, ज्ञान (ग्यान) = २१, श्याम = २१, स्नेह = २१, स्त्री = २, स्थान = २१, श्री = २

Rule 10:

(११) संयुक्ताक्षर से पहले वाले लघु वर्ण का मात्राभार २ (गुरु) हो जाता है, (अर्थात् किसी शब्द के बीच में अर्द्ध वर्ण आने पर वह पूर्ववर्ती / पहलेवाले वर्ण के मात्राभार को दीर्घ/गुरु कर देता है)-

जैसे- अक्कड़ = २११, बक्कड़ = २११, नम्र = (न म् र) = २१, विद्या (वि द् या) = २२, चक्षु (चक्शु) = २१, सत्य = २१, वृक्ष (वृक्श) = २१, यत्र (यत् र) = २१, विख्यात = २२१, पर्ण = (प र् ण) २१, गर्भ = (गर् भ) २१, कर्म = क (क र् म) २१, मल्ल = २१, दर्पण = २११, अर्चना = २१२, विनम्र (वि न म् र) = १२१, अध्यक्ष (अध्यक्श) = २२१

Rule 11:

(१२) संयुक्ताक्षर के पहले वाले गुरु / वर्ण के मात्राभार में कोई अन्तर नहीं आता है-

जैसे- प्राप्तांक = २२१, प्राप्त = २१, हास्य = २१, वाष्प = २१, आत्मा = २२, सौम्या = २२, शाश्वत = २११, भास्कर = २११, भास्कराचार्य = २१२२१, उपाध्यक्ष (उपाध्यक्श) = १२२१

Rule 12:

(१३) अर्द्ध वर्ण के बाद का अक्षर 'ह' गुरु (दीर्घ मात्रा धारक) होता है तो, अर्द्ध वर्ण भारहीन हो जाता है जैसे –

तुम्हें = १२, तुम्हारा = १२२, तुम्हारी = १२२, तुम्हारे = १२२, जिन्हें = १२, जिन्होंने = १२२, किन्होंने = १२२, उन्होंने = १२२, कुम्हार = १२१, कन्हैया = १२२, मल्हार = १२१, कुल्हा = १२, कुल्हाड़ी = १२२, तन्हा = १२ , सुन्हेरा = १२२, दुल्हा = १२, अल्हेला = १२२

Rule 13:

(1४) किन्तु अर्द्ध वर्ण के बाद का अक्षर 'ह' लघु होने पर मात्राभार वही रहता है जैसे-

अल्हड़ = २११, कुल्हड़ = २११, चुल्हड़ = २११, दुल्हन = दुल्हिन = २११, कुल्हिया = २१२, कल्ह = २१, तिन्ह = २१